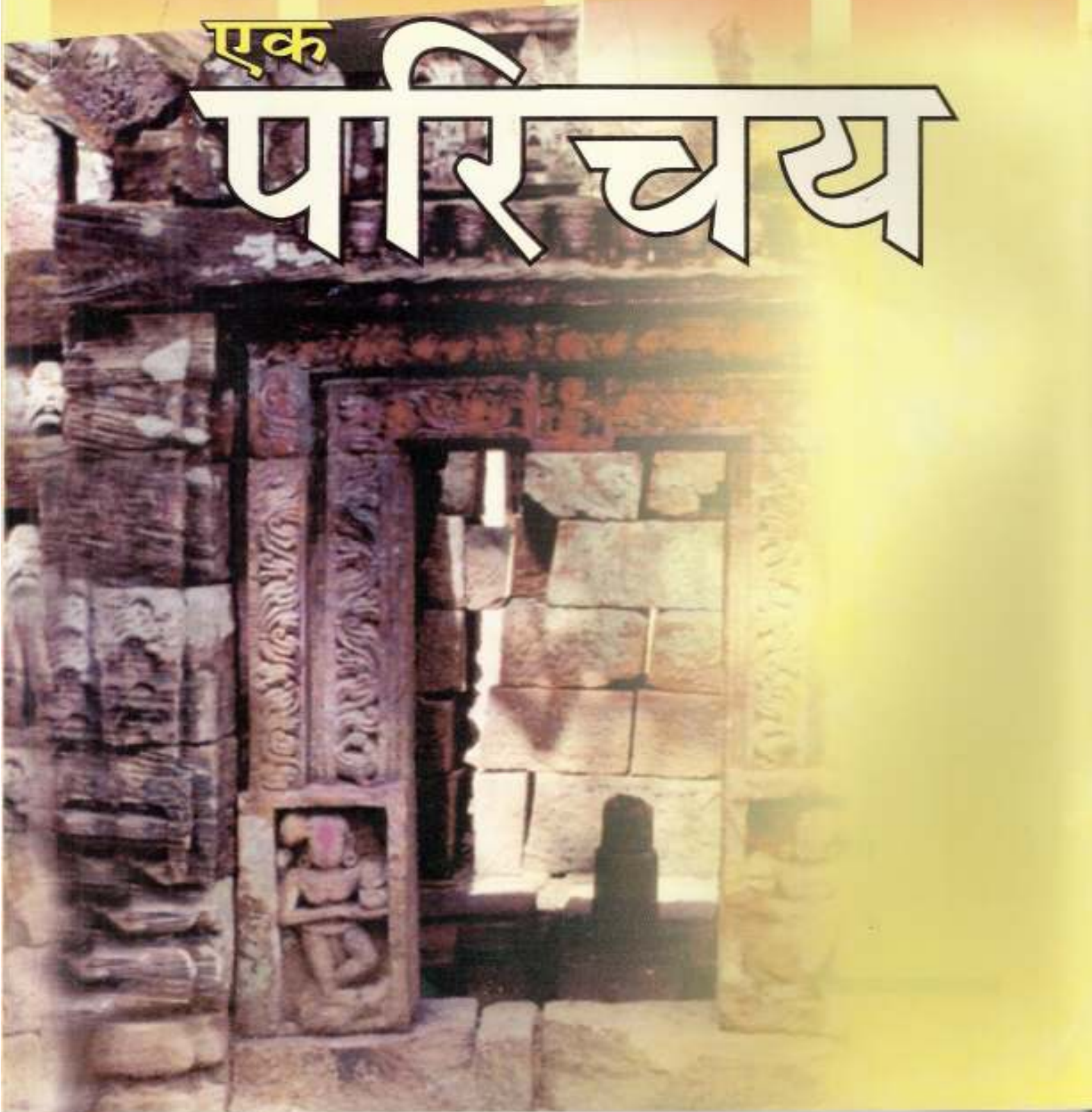




टांगीनाथ मंदिर :

एक

परिचय



टांगीनाथ मंदिर : एक परिचय

लेखक सह-सम्पादक

अजित कुमार प्रसाद
क्षेत्रीय उप-निदेशक, पुरातत्व, राँची

उप- सम्पादक

डॉ. उमेश चन्द्र द्विवेदी
संग्रहालयाध्यक्ष, राँची संग्रहालय

डा. अमिताभ कुमार
सहायक निदेशक, पुरातत्व, राँची

सह लेखक एवं सहायक सम्पादक

श्री सत्यदेव राय
वरीय तकनीकी सहायक

एवं

छायाकार

श्री सुबोध कुमार

प्रकाशक

कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग
झारखण्ड, राँची

सुदर्शन भगत
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
मुख्यमंत्री सचिवालय



दूरभाष:-
(कार्यालय) : 2284630
(आवास, राँची) : 2442713
फैक्स : 2284630
(आवास, गुमला) : 221413



संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, झारखंड सरकार (पुरातत्व प्रक्षेत्र) द्वारा **टांगीनाथ मंदिर : एक परिचय** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। टांगीनाथ मंदिर झारखंड राज्य के प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों में से एक महत्वपूर्ण स्थल है। उन्नत सांस्कृतिक एवं तकनीकी ज्ञान का मणि कांचन योग इस ऐतिहासिक स्थल पर दर्शनीय है।

मैं इस अवसर पर विभाग को अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता हूँ।

(सुदर्शन भगत)

N. N. Pandey (I.A.S.)
Secretary to Govt.



Deptt. of Art-Culture, & Youth Affairs
Jharkhand, Ranchi

☎ : 0651-2408888 (O)

2440088 (R)

Fax : 0651-2403861

“दो शब्द”

‘टांगीनाथ मंदिर : एक परिचय’ कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग के पुरातत्व प्रक्षेत्र द्वारा पुरातात्विक महत्व के स्थलों पर पुस्तिका प्रकाशन की श्रृंखला का तृतीय सोपान है। इसके पूर्व ‘अतीत का धरोहर : जगन्नाथ मंदिर’ एवं राँची जिले के पुरातात्विक स्थलों का एक परिचय’ जैसी सूचना प्रदायी दो पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया जा चुका है।

टांगीनाथ मंदिर का विवरण इस सद्यः प्रकाशित पुस्तिका में सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है ताकि विद्यार्थियों एवं आम जनता को राज्य के इस महत्वपूर्ण धरोहर से सुपरिचित कराया जा सके। इस पुस्तिका में टांगीनाथ मंदिर के ऐतिहासिक एवं कलात्मक पक्ष को रेखांकित किया गया है।

वर्तमान कृति झारखंड राज्य विशेषकर गुमला जिले की कला एवं संस्कृति के अध्ययन में सहायक सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

विभाग खासकार पुरातत्व प्रक्षेत्र के सभी कर्मी एवं पदाधिकारीगण इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं।

(एन.एन. पाण्डेय)

अमिताभ चौधरी
निदेशक



कला-संस्कृति, खेल-कूद एवं युवा कार्य विभाग
झारखण्ड, राँची

दूरभाष : 0651-2403740 (का)

0651-2502914 (आ)

फैक्स : 0651-2403740

संदेश

झारखण्ड राज्य का गुमला जिलान्तर्गत टांगीनाथ मंदिर समूचे भारत में प्रसिद्ध है। यह पुस्तिका कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग के पुरातत्व प्रक्षेत्र द्वारा माननीय मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुण्डा के निदेश पर तैयार की गयी है। मैं आशा करता हूँ कि पाठकगण पुस्तिका के अध्ययन के पश्चात् टांगीनाथ मंदिर के पुरातात्विक महत्व को समझ पायेंगे और उनमें सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण एवं सुरक्षण के प्रति चेतना जागृत हो पायेगी। यही हमारा उद्देश्य भी है।

अमिताभ चौधरी

सम्पादकीय

पुरातात्विक दृष्टि से झारखण्ड राज्य देश में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ प्रागैतिहासिक काल से ब्रिटिश शासन काल तक के पुरातात्विक स्मारक विद्यमान हैं। राज्य का क्षेत्रफल 79714 वर्ग कि० मी० (देशान्तर 83° 23' से 87° 53' 30", अक्षांश 21° 58' से 25° 30' 30") हैं। इस राज्य में तत्काल 22 जिला हैं। करीब-करीब सभी जिलों से पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र में मानव का आगमन पूर्व पाषाण काल में हुआ। उस समय उन्हें धातु का ज्ञान नहीं था। इस राज्य में पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, उत्तर पाषाण काल, उच्च मध्य पाषाण काल, नव पाषाण काल, ताम्र-पाषाण काल तथा ऐतिहासिक काल के पुरावशेष काफी बड़ी संख्या में विभिन्न विद्वानों द्वारा खोज निकाले गये हैं। प्रथम शताब्दी (कुषाण काल) के प्राचीन भवनों के अवशेष भी विभिन्न स्थलों में प्राप्त हुए हैं।

इस राज्य में प्राचीन मंदिरों के निर्माण के प्रमाण उत्तर के गुप्त काल (7वीं शताब्दी) से पश्चिमी सिंहभूम जिलान्तर्गत वेणुसागर तथा गुमला जिलान्तर्गत टांगीनाथ नामक पुरातत्व स्थल में प्राप्त हुए हैं। इन मंदिरों के अतिरिक्त 8वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी के अन्य कई मंदिरों के भग्नावशेष विद्यमान हैं। इनमें राँची जिलान्तर्गत देवडी, हर्राडीह, धनबाद जिलान्तर्गत झिनझिनी पहाड़ी ग्राम स्थित मंदिर, ग्राम उपचुड़िया, पांझा, कतरास गढ़ के निकट स्थित लिलोरी स्थान, बोकारो जिलान्तर्गत अलुवारा, भट्बिनोर, चेचोगढ़, दरीका, चतरा जिलान्तर्गत ईटखोरी एवं कुलेश्वरी, पूर्वी सिंहभूम जिलान्तर्गत कदमजोडा, भूला, पटामदा आदि में मंदिर के भग्नावशेष तो नहीं विद्यमान हैं परन्तु आस-पास के क्षेत्र से प्रस्तर खण्ड एवं आमलक आदि बिखरे पड़े हैं। यह इस तथ्य का द्योतक है कि इनके आस-पास प्राचीन मंदिर थे, जो कालांतर में नष्ट हो चुके हैं। लोहरदगा जिलान्तर्गत खकपरता का मंदिर प्रस्तर शिलाखण्ड को तरासकर बनाया गया है। ये मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली के लिए समूचे देश में प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों पर उड़ीसा एवं बंगाल के मंदिर स्थापत्य कला का स्पष्ट प्रभाव है। इन प्राचीन मंदिरों के अतिरिक्त मुस्लिम शासन काल में भी झारखण्ड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चैतन्य महाप्रभु की भक्ति से प्रभावित होकर मंदिरों के निर्माण किये गये हैं। इस काल के मंदिरों में पूर्वी सिंहभूम जिलान्तर्गत श्याम सुन्दरपुर, राँची जिलान्तर्गत तमाड़, बुण्डू, जन्नाथपुर स्थित मंदिर, राम मंदिर चुटिया, बोडिया स्थित गोपाल मंदिर, पूर्वी सिंहभूम जिलान्तर्गत दालभूमगढ़ के निकट ग्राम नरसिंहपुर स्थित मंदिर, दुमका जिलान्तर्गत मालुटी मंदिर समूह, हजारीबाग जिलान्तर्गत चितरपुर, कैथा, महुदीपहाड़ी, बरकट्टा स्थित मंदिर आते हैं।

उपर्युक्त मंदिरों की जानकारी देशी एवं विदेशी विद्वानों द्वारा 19वीं-20वीं शताब्दी में झारखण्ड राज्य (तत्कालीन छोटानागपुर) के पुरातात्विक अन्वेषण एवं सर्वेक्षण के फलस्वरूप प्राप्त हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात् विशेषकर पुरातत्त्व एवं संग्रहालय निदेशालय, बिहार तथा काशीप्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना के तकनीकी पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये गये हैं।

कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा विभाग, झारखण्ड के पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा झारखण्ड राज्य के गठन के पश्चात् किये पुरातात्विक सर्वेक्षण के कार्य के फलस्वरूप कई मंदिर प्रकाश में आये हैं।

माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री सुदर्शन भगत के कार्यालय कक्ष में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि गुमला जिलान्तर्गत टांगीनाथ मंदिर पर एक पुस्तिका प्रकाशित की जाय। इस निदेश के आलोक में वर्तमान पुस्तिका पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

माननीय मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुण्डा, माननीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री सुदर्शन भगत, सचिव-कला, संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग, श्री एन०एन०पाण्डेय एवं निदेशक श्री अमिताभ चौधरी, सचिवालय स्तर के अन्य पदाधिकारीगण, डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, सहायक निदेशक (संस्कृति), श्री ब्रजेश कुमार अधिकारी, श्री मनोज कुमार पासवान, श्री गंगाराम महतो, श्री सुबोध कुमार से प्राप्त सहयोग के परिणाम स्वरूप ही प्रस्तुत पुस्तिका की रचना एवं प्रकाशन सम्भव हुई है।

पुस्तिका के लेखन कार्य में डा. अमिताभ कुमार, सहायक निदेशक, पुरातत्त्व एवं सह-लेखक श्री सत्यदेव राय, वरीय तकनीकी सहायक एवं श्री ब्रजेश कुमार अधिकारी क्षेत्रीय उप-निदेशक, पुरातत्त्व, राँची कार्यालय द्वारा इस पुस्तिका के लेखन कार्य में विशेष रूप से सहयोग दिया गया है। इनके कठिन परिश्रम के फलस्वरूप ही पुस्तिका का लेखन कार्य अल्प अवधि में सम्भव हो सका है।

इस संदर्भ में विद्वत जनों से नम्र निवेदन है कि आवश्यक तथ्यों के समावेश तथा त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उपयोगी सुझाव देने की कृपा करें ताकि अगले प्रकाशन को और भी उपयोगी बनाया जा सके। इस कृपा के लिये मैं हृदय से आभारी रहूंगा।

(अजित कुमार प्रसाद)

टांगीनाथ मंदिर का एक परिचय

प्रसिद्ध टांगीनाथ मंदिर का भग्नावशेष गुमला जिला मुख्यालय से करीब 75 कि०मी० उत्तर-पश्चिम दिशा में डुमरी प्रखण्ड के अन्तर्गत मझगाँव के निकट टांगीनाथ की पहाड़ी के ऊपर अवस्थित है। प्रखण्ड मुख्यालय डुमरी से मंदिर की दूरी लगभग 9 कि०मी० है। इस मंदिर के पूरब में मझगाँव, पश्चिम में लुचुटपाट, उत्तर में कनिडरा एवं लिरिया चुआ तथा दक्षिण में महुआडीह नामक स्थान है।

जिला मुख्यालय गुमला से एक पक्की सड़क करीब 2 कि.मी. दक्षिण जाने के बाद उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर मुड़ जाती है। इस मार्ग द्वारा रायडीह, माँझाटोली एवं चैनपुर होते हुए नावाटोली पहुँचा जा सकता है। नावाटोली से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर जाने वाली सड़क से मझगाँव मोड़ पहुँचा जा सकता है। वहाँ से पश्चिम दिशा जानेवाली कच्ची सड़क से टांगीनाथ पहुँचा जा सकता है। मझगाँव मोड़ से टांगीनाथ की दूरी लगभग 4 कि.मी. है।

उक्त पहाड़ी की चोटी से आधी दूरी पर प्राचीन पकी ईंट बड़ी संख्या में बिखरे पड़े हैं। पहाड़ी की चोटी पर पकी ईंट के द्वारा निर्मित प्राचीन मंदिर के भग्नावशेष विद्यमान हैं। इन ईंटों के फलस्वरूप इसने भिंड का रूप धारण कर लिया है। इसके निकट देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, वास्तु-खण्ड, शिवलिंग, अन्य पुरावशेष तथा लोहे का एक प्राचीन त्रिशूल भी विद्यमान है।

एक विशालकाय एवं अद्भूत प्राचीन खण्डित त्रिशूल यहाँ की पवित्र भूमि पर अवस्थित है। इसकी गोलाई 11 ईंच है। यह अष्टकोणीय है। धरातल से इसकी ऊँचाई 22 ईंच है। यह 60° के कोण बनाता हुआ झुका है तथा एक गांठ है। इस गांठ के ऊपर त्रिशूल है, जिसकी लंबाई 22 ईंच है। इस त्रिशूल की लम्बाई 7 फीट 5 ईंच तथा न्यूनतम चौड़ाई 6¼ ईंच है परन्तु अधिकतम चौड़ाई 11 ½ ईंच है। त्रिशूल का ऊपरी दोनों भाग तलवार के समान है। जिसकी लम्बाई, चौड़ाई एवं मोटाई क्रमशः 5 फीट, 9 ईंच एवं 7 ईंच है। त्रिशूल की ऊँचाई भूमि से 11 फीट के लगभग रहा होगा। त्रिशूल का कितना भाग भूमि के अन्दर धंसा है, इसकी निश्चित जानकारी स्थानीय पुजारी को भी नहीं है। परन्तु यह बतलाया गया कि 6 फीट की खुदाई करने के बाद भी त्रिशूल का अन्तिम भाग नहीं मिलता है अर्थात् यह और भी नीचे जा रहा है। मंदिर के पुजारी तथा स्थानीय लोगों के अनुसार अनुमानतः इस त्रिशूल की कुल लम्बाई 17 फीट से ऊपर है। त्रिशूल में कई जोड़ भी हैं। इसके ऊपरी तीनों भागों को जोड़ा गया है।

त्रिशूल के निम्न भाग की कुल लम्बाई अनुमानतः 8 फीट है। मध्य भाग की लम्बाई 10 ईंच है। इस त्रिशूल की सबसे मुख्य विशेषता यह है कि वर्षा और पानी में रहने के बाद भी

इसमें जंग का कोई नामोनिशान नहीं है। इससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि प्राचीन काल में भी झारखण्ड की लौह निर्माण तकनीक काफी उत्कृष्ट थी। इस आधुनिक काल में भी लोहे की सामग्री को वर्षा एवं पानी कुछ ही समय में प्रभावित कर देती है और उसमें जंग लग जाता है। इस त्रिशूल के समान ही एक लौह स्तंभ दिल्ली के कुतुबमीनार स्थित स्थल पर विद्यमान है, जिसका निर्माण राजा चन्द्र द्वारा कराया गया है। इतिहासकारों ने इस लौह स्तंभ के निर्माता राजा चन्द्र की पहचान गुप्तकालीन राजा चन्द्रगुप्त द्वितीय से की है। चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल पांचवीं शताब्दी है। तकनीकी आधार पर इस त्रिशूल का काल भी गुप्त काल (5वीं-6वीं शताब्दी) निर्धारित किया जा सकता है। स्थल से प्राप्त कुछ अन्य पुरावशेषों से इस तिथि की पुष्टि होती है। आज त्रिशूल कई टुकड़ों में स्थल पर विद्यमान है।

इस विशालकाय त्रिशूल की तुलना में स्थल पर विद्यमान मंदिरों के भग्नावशेष छोटे हैं। मंदिर के आंगन की लम्बाई एवं चौड़ाई क्रमशः 6 फीट 1½ इंच तथा 5 फीट 1½ इंच है। मंदिर के बाहरी प्रवेश द्वार, भीतरी प्रवेश द्वार के मध्य की लम्बाई-चौड़ाई क्रमशः 3 फीट 10 इंच एवं 2 फीट है। बाह्य प्रवेश की सीढ़ी की ऊँचाई 8 फीट है। प्रवेश द्वार की ऊँचाई एवं चौड़ाई क्रमशः 5 फीट X 1 फीट 5 इंच है। सन् 1910 में एस० सी० राय ने प्रवेश द्वार के छत को देखा था, परन्तु अब यह भी क्षतिग्रस्त हो चुका है। उस समय मंदिर के दीवार की ऊँचाई 6 फीट 7 इंच थी परन्तु अब यह भी कम हो गयी है। स्थल पर विद्यमान प्रस्तर वास्तु-खण्डों को देखने के पश्चात् यह स्पष्ट है कि मंदिर के रास्ते एवं प्रवेश द्वार पर शिखर होगा, जो कि कालान्तर में नष्ट हो चुका है। श्री राय ने अपने लेख में इस मंदिर के प्रवेश द्वार एवं रास्ते के ग्राउण्ड प्लान को प्रकाशित किया है, जो इस प्रकार है।

प्रवेश द्वार का निर्माण आयताकार (Rectangular) बलुवाही पत्थर के स्तम्भों तथा प्रस्तर पट्टिकाओं (Slab) की सहायता से किया गया है। दीवारें भी बालुवाही प्रस्तर खण्डों से निर्मित किये गये हैं, जिनका रंग अब धूमिल हो चुका है। इस प्रवेश द्वार एवं दीवारों पर अत्यंत सुन्दर एवं आकर्षित करने वाली वृक्षों की पत्तियां, मालाएं, पुरुषों एवं स्त्रियों, भवनों, खिड़कियों, मेहराबों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। दीवारों पर उत्कीर्ण कलाकृतियाँ अस्पष्ट हैं। प्रवेश द्वार के दो स्तम्भों के निम्न भाग में दो आले हैं, जिनकी लम्बाई एवं चौड़ाई क्रमशः 1 फीट 9½ इंच एवं 11½ इंच हैं। इनमें एक देवी की मूर्ति उत्कीर्ण है। जिसकी लम्बाई 16 इंच है। देवी का एक मुड़ा हाथ छाती के पास है। इस हाथ में एक पात्र है। मूर्ति के उपरी भाग में दो अत्यंत सुन्दर मालायें उत्कीर्ण हैं। भीतर की माला प्रथम से 1½ इंच नीचे की ओर है, जिसे एक पक्षी सहारा दिये हुए है। यह प्रस्तर खण्ड प्रवेश द्वार की छत का भाग है। इसके बाह्य भाग पर मालाओं की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। माला के मध्य भाग में गणेश की मूर्ति उत्कीर्ण है। प्रवेश द्वार की भीतरी भाग में पुरुष देवता की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। मूर्ति की ऊँचाई 2 फीट 7 इंच है।

फीट 8 1/2 इंच एवं 1 फीट 9 इंच है।

(ग) मंदिर के गर्भगृह में प्रस्तर शिवालिंग विद्यमान है। इसकी लम्बाई एवं गोलार्ध क्रमशः 1

एवं 8 1/2 इंच चौड़ी शिवालिंगखण्ड में उल्कीर्ण है।

(ख) इस मूर्ति में भगवान शिव के दायां हाथ में त्रिशूल तथा बायां हाथ अमय मुद्रा में है। इनके गले में हार तथा कानों में कण्डूल शोभायमान है। यह मूर्ति 2 फीट 7 इंच लम्बी

की लम्बाई एवं चौड़ाई क्रमशः 2 फीट 7 1/2 इंच एवं 9 इंच है।

(क) इनमें एक मूर्ति शैव की है। इनके चार हाथ हैं। इनके दाहिने हाथ में कमल तथा तलवार तथा बायां हाथ में खण्ड तथा मुण्डमाल है। भगवान के मस्तक पर जटा मुकुट है। मूर्ति

निम्न प्रमुख है :-

आधिकतर मूर्तियां मंदिर के अन्दर रखी मूर्तियों से मिलती-जुलती हैं। इन मूर्तियों में

फीट की दूरी पर ईंटों का पिण्ड भी है।

बायेंखण्ड, पश्चिमाकृति, शिवालिंग तथा अन्य पुरावशेष विद्यमान हैं। त्रिशूल से करीब 110

इस मूर्ति के अतिरिक्त मंदिर के एक प्रांगण में कई खलिङ्ग मूर्तियां, स्तम्भ, स्तम्भ

कण्डूल हैं। यह विष्णु की मूर्ति है। प्रधान देवता के मस्तक पर दो शंख छत्र लिये हैं।

के समान आकृति विद्यमान है। इनके मस्तक पर त्रिशूल मुकुट है तथा कानों में लम्बा

मस्तक का छंदा है। इनमें से एक मूर्ति के हाथ में शंख है। प्रधान देवता शिव पर दो शंख

इनके दो मुँह हाथों में गदा एवं कमल हैं। इनका शेष दो हाथ गदा देवी एवं चक्र पुंज के

उल्कीर्ण पुंज देवता के मूर्ति की ऊँचाई 2 फीट 4 इंच है। इस देवता के चार हाथ हैं।

इस मंदिर की दीवारों से सटा एक प्रस्तर खण्ड है, जिसकी ऊँचाई 3 फीट 2 इंच है, परन्तु

स्थापित भगवान टांगीनाथ (शिवालिंग) का निर्माण काले रंग के प्रस्तर से किया गया है।

निर्माण प्राचीन पक्की ईंट के मंदिर के ईंटों से किया गया है। पक्की ईंट के मंदिर में

टांगीनाथ की कृपा से उन्हें संतान प्राप्त हुआ था। जनश्रुति के अनुसार इस मंदिर का

तत्कालीन राजा राम सिंह द्वारा भगवान टांगीनाथ के सम्मान में किया गया है। भगवान

पक्की ईंट द्वारा निर्मित मंदिर बाद के काल की है। इसका निर्माण जसपुर के

छाता प्रतिरूप है।

समान होगा। यह मंदिर उड़ीसा राज्य की राजधानी भुवनेश्वर नगर में स्थित मंदिरों की

के मंदिर का स्वरूप एवं बंगाल राज्य के पुरुलिया जिले के ग्राम पाया स्थित मंदिर के

इनका निर्माण किया गया होगा तब इनका स्वरूप कृसा होगा ? मया मत है कि टांगीनाथ

मंदिर के वर्तमान भग्नावशेष को देखने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि जब

किया गया है। इनके बायें और खलिङ्ग स्तम्भों के आसन बिखरे पड़े हैं।

नहीं है। मंदिर के मध्य भाग में दो प्रस्तर लिंग हैं, जिनकी स्थापना मंदिर निर्माण के बहुत बाद में

कि यह नौ सिंघों से निर्मित है। प्रवेश द्वार के प्रस्तर खण्ड के उपरी भाग में कोई आकृति उल्कीर्ण

इनके हाथ तथा गले में माला जनेत्र के सदृश्य हैं। बायें तरफ की माला को देखने से लगाता है

पर्य है। मुख्य मूर्ति के नीचे दोनों ओर नारी की मूर्ति है।

प्रथम दाहिने हाथ में त्रिशूल तथा बायाँ हाथ क्षतिग्रस्त है। द्वितीय दाहिने हाथ में अस्त्र है। मंदिर के प्रांगण में एक अत्यंत सुन्दर मूर्ति विद्यमान है। यह शिव की मूर्ति है। मूर्ति के

में था। इसके धरे की लंबाई 1 फीट है। इसमें भी प्रस्तर निर्मित शिवलिंग विद्यमान है।

स्थल पर भी एक मंदिर रहा होगा, जो अब नष्ट हो चुका है। इसका प्रवेश द्वार भी परिवर्तन इसके आस-पास के क्षेत्र में पक्की ईंट बिखरे पड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस

क्षतिग्रस्त है। मूर्ति की लंबाई 2 फीट 10 1/2 इंच एवं चौड़ाई 1 फीट 7 1/2 इंच है।

की दो प्रतिमायें विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त एक प्रतिमा देवी दुर्गा की है। इनके हाथ दिशा में है। प्रवेश द्वार पर लोहे का झील बना है। मंदिर के अन्दर महिषासुर मर्दिनी की प्रस्तर

मूला मंदिर के पीछे पूर्व दिशा में एक आधुनिक मंदिर है, जिसका प्रवेश-द्वार परिवर्तन

जाती है। इस प्रकार की व्यवस्था अन्य स्थलों पर देखने को भी मिलती है।

का जमा करने हेतु किया गया है क्योंकि कुण्ड के दीवार से निकली नाली मंदिर की ओर देखने के पर्याय यह धारणा बनती है कि कुण्ड का निर्माण मंदिर के अन्दर इकट्ठी पानी

इसके जल का इस्तेमाल पूजा-पाठ में किया जाता था। परन्तु कुण्ड की बनापट को स्थानीय लोगों के कथनानुसार इस कुण्ड का निर्माण जल-संग्रह हेतु किया गया था।

औसतन लंबाई चौड़ाई एवं मोटाई क्रमशः 1 फीट 1 1/2 इंच X 8 1/2 इंच X 2 3/4 इंच है। प्रस्तर की सीढियाँ परिवर्तन में है। कुण्ड में पानी के प्रवेश हेतु नाली दीर्घा में है। ईंटों की

एवं गहराई क्रमशः 5 मीटर X 4.10 मीटर X 1.50 मीटर है। इस कुण्ड में जलने के लिए त्रिशूल स्थल के ऊपर में पक्की ईंटों द्वारा निर्मित एक कुण्ड है। इसकी लंबाई, चौड़ाई

है। इस मूर्ति की लंबाई एवं चौड़ाई क्रमशः 2 फीट 6 1/2 इंच एवं 10 इंच है।

गल एवं बाल की मूर्तियाँ कलात्मक है। गल की मूर्ति के ऊपर बाध की आकृति उत्कीर्ण

की लंबाई 2 फीट 2 1/2 इंच तथा चौड़ाई 1 फीट 1 1/2 इंच है।

विकृत स्पष्ट है। सारथी स्व को हांक रहे हैं। भगवान सूर्य के दोनों हाथों में कमल पुष्प है। मूर्ति विराजमान है। इनके स्व को सारथी अथ (सर्प) खींच रहे हैं। स्व का सारथी अरुण की आकृति

2 इंच चौड़ी है। भगवान कमलासन पर खड़े हैं। सूर्य मूर्ति में भगवान सूर्य अपने स्व पर मूर्ति 1 फीट 4 1/2 इंच ऊँची तथा 9 1/2 इंच चौड़ी है। शिबू की प्रतिमा 2 फीट ऊँची तथा 1 फीट

मंदिर के उत्तर में शिबू, वाराही, सूर्य, गज बाल, देवियाँ आदि की प्रतिमायें हैं। वाराही की

ईंच तथा 8 इंच है।

उत्कीर्ण है। इनके हाथों में कलश है। मूर्तियों की लंबाई एवं चौड़ाई क्रमशः 1 फीट 8 1/2

द्वार को छू रहा है। दो देवी की प्रतिमायें (गंगा एवं यमुना) प्रवेश द्वार के दोनों चौखटाँ पर आकर्षक है। मंदिर की मूर्ति भी कलात्मक एवं सुन्दर है। पक्षी अपनी ओर से पुँछ के अक्षिप्त

जर्मना की कलात्मक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। विशेषकर भगवान गणपति की मूर्ति काफी मंदिर का प्रवेश द्वार अत्यंत आकर्षक एवं कलात्मक है। इसमें नव भूर्त, गणेश, गंगा

इस प्रतिक्रिया में प्रकाशित मंदिर तथा प्रवेश द्वार का प्लान श्री ए.एस. सी. राय द्वारा प्रकाशित लेख से लिया गया है। यह लेख जर्नल ऑफ बिहार, उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी के प्रथम अंक (1915) में प्रकाशित है। मंदिर निर्माण की शैली के आधार पर डॉ. ०. पी. सिन्हा पूर्व निदेशक, पुरातत्व एवं संयोजकत्व निदेशालय, बिहार एवं विमानायाय, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग पटना द्वारा टॉपीनाथ में स्थित मंदिर के निर्माण का काल 6वीं शताब्दी बताया गया है। इंग्लैंड के शिबल विश्वविद्यालय, केंब्रिज के पुरातत्व विभाग के प्राधान्यायक डॉ. ०. पी. सिन्हा के अनुसार एकवर्ती

करने लगे विन्दे स्थानीय जनता द्वारा कहती है।

ही गये। इस घटना के बाद मूरत मांडी के उत्तराधिकारी इस मंदिर के पुजारी का कार्य मंडागांव के निकट मंदिर की खोज तथा भगवान टॉपीनाथ की पूजा-अर्चना में तल्लीन उन्हें अपने में अपने पास बुलाया। मूरत मांडी ने भगवान की आज्ञा का पालन करते हुए काटीला, नवाडीह-मंडागांव के निकट है। वहां दोनों मांडे कुछ दिन तक टॉपीनाथ ने पहुँच गये। राजी विश्राम के पशुपाल चलते-चलते काटीला, नवाडीह पहुँच गये। सकल हुए। दोनों मांडे एक हिरण के शरीर में प्रवेश कर बोरवे परगना के बोखरी ग्राम निकटकर मूर्त के भीतर दबा दिया परन्तु भगवान टॉपीनाथ की कृपा से वे भगवान में कारावाणवा वहां के तत्कालीन शासक ने इन दोनों मांडियों पर नाराज होकर उन्हें जंगल में कि तात्कालीन सुरगंगा स्टेट में था। ये दोनों सुरगंगा राज्य के कर्मचारी थे। कुछ अज्ञान वर्तमान पुजारी के पूर्वज मूरत मांडी एवं मूरत मांडी और भगवान मूर्त के निवासी थे जो

उन्होंने इस संबंध में एक लम्बी कहानी का उल्लेख किया है। जो निम्नवत् है :-

अधिर एक जनजाति के हैं क्योंकि इनके शरीर का बनाने जनजाति के सदस्य है। के पुजारी का जनसंसारण हुआ कहते हैं। मानव शारीरिक एक्सोसोम का मत है कि ये मंदिर एवं मूर्तियों के निर्माण के काल के संबंध में कोई स्थानीय परंपरा नहीं है। मंदिर

बहरा, तलवार, तथा अन्य अस्त्र आदि हैं।

हिर मानव का है। देवी एक हाथ से अस्त्र के कस को पकड़ी है तथा शेष हाथों में धनुष, छोटा तथा दाहिना धर अस्त्र महिषासुर के शरीर पर है। अस्त्र का शरीर भ्रंश का है, परन्तु कि कपर लिखा जा चुका है, तीन हैं। सभी के आठ हाथ हैं। देवी प्रतिमा का बायां धर उपर्युक्त वर्णित आभूषणों एवं वस्त्रों से सुशोभित दुर्गा की मूर्ति है। इनकी संख्या जैसे जैसे लपेटे हैं जैसे कि सप्त लिपटा है।

पहननाया गया है जिसमें कि मध्य से दोनों धर के बीच में कपिन लटक रहा है। ये वस्त्र शरीर को मालाओं को देखने से जनक का मान होता है। इनमें कुछ की कमर पर वस्त्र की इस प्रकार गले को सुन्दर हार हार सुशोभित कर रहे हैं तथा कुछ के गले में लम्बी मालाएँ हैं। इन लम्बी हैं, जो कुछ लक लटकते हैं। इनके चेहरे पर शालीति विराजमान है। कुछ देवी-देवताओं के धर स्थान दिया गया है। इनकी कमर पर लगी है तथा हिर के मुकुट हैं। कर्णामूषण काफी उपर्युक्त मूर्तियों कलात्मक है। कलाकार द्वारा विशेषकर नारी मूर्तियों के शारीरिक सौन्दर्य

क्रमांक

- फलक

1.

टांगीनाथ मंदिर प्रवेशद्वार

2.

टांगीनाथ मंदिर में महिषासुर मंदनी,
उमा-महेश्वर एवं देवी की प्रतिमा

3.

जसपुर के राजा द्वारा निर्मित मग्न मंदिर
अवशेष अन्दर रखी, सूर्य, विष्णु, शिव एवं
उमा-महेश्वर एवं अन्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ

4.

मंदिर के प्रांगण में एकमुखी शिवलिंग

5.

मंदिर में अवस्थित त्रिशूल के अवशेष

6.

मंदिर के आमलक के अवशेष

7.

त्रिशूल को जोड़कर इसका वृहतस्वरूप

8.

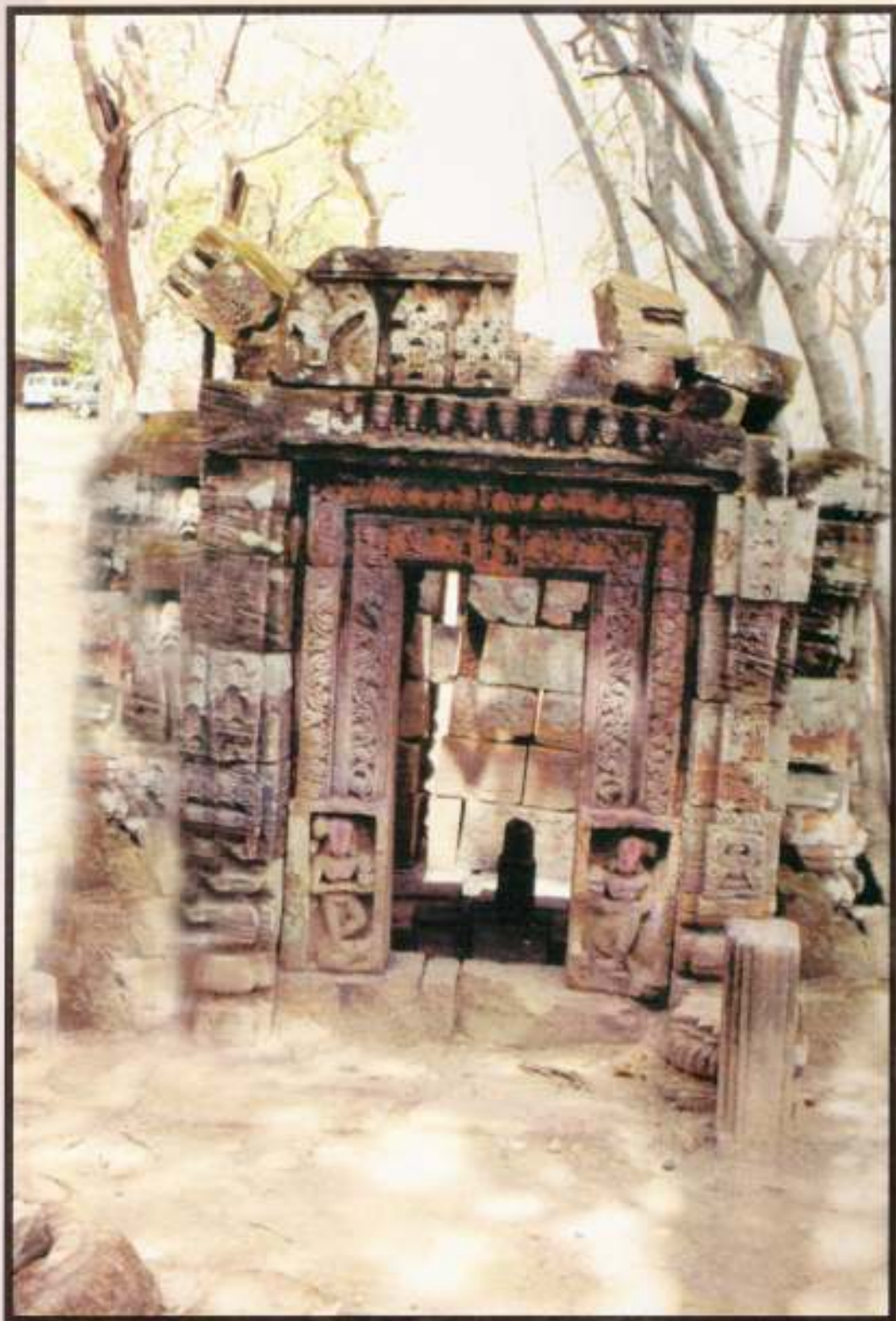
प्राचीन ईंट भग्नावशेष

9.

मंदिर के प्रांगण में उमा - महेश्वर

10.

मंदिर के प्रांगण में मूर्तियाँ एवं पुरावशेष

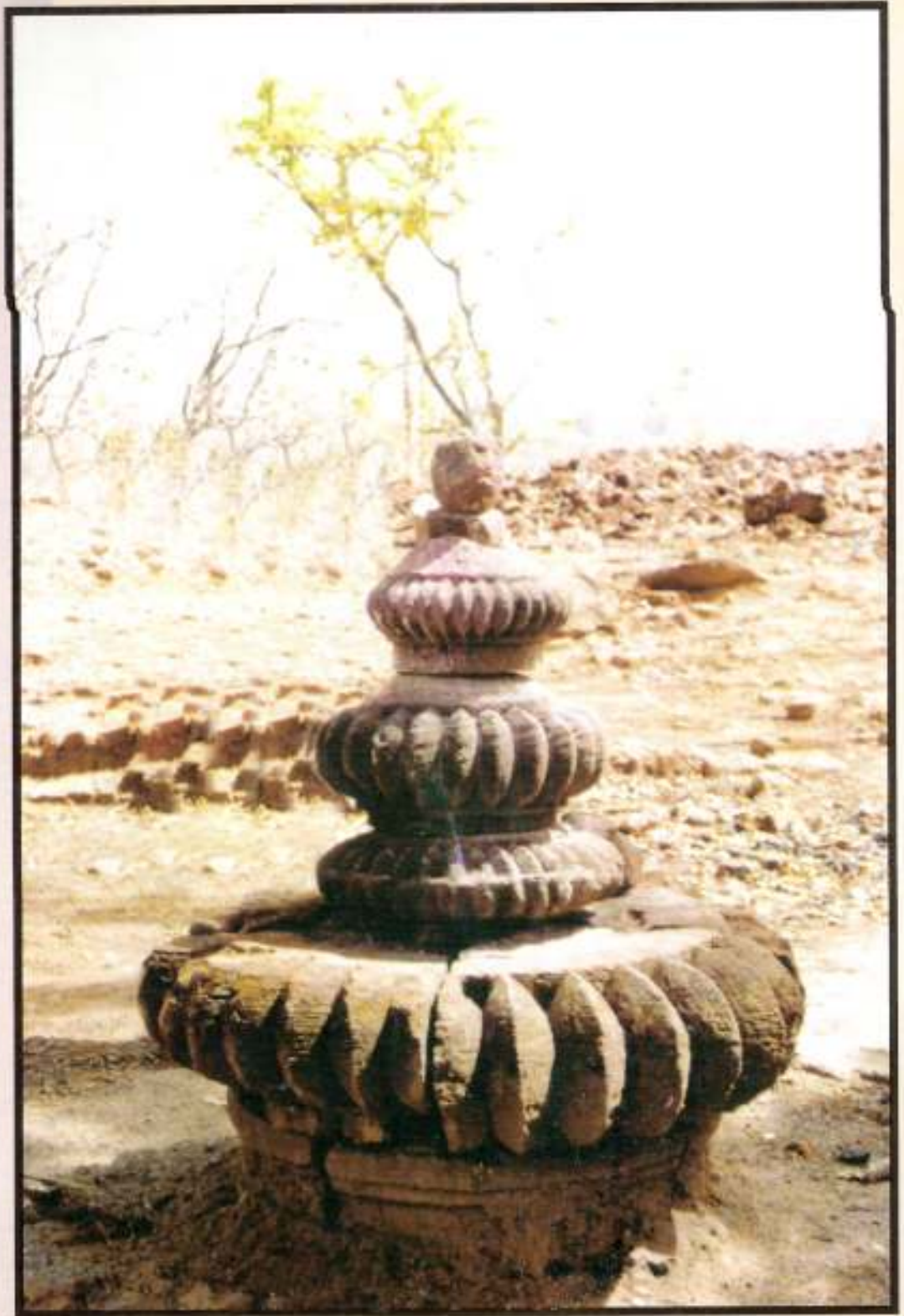






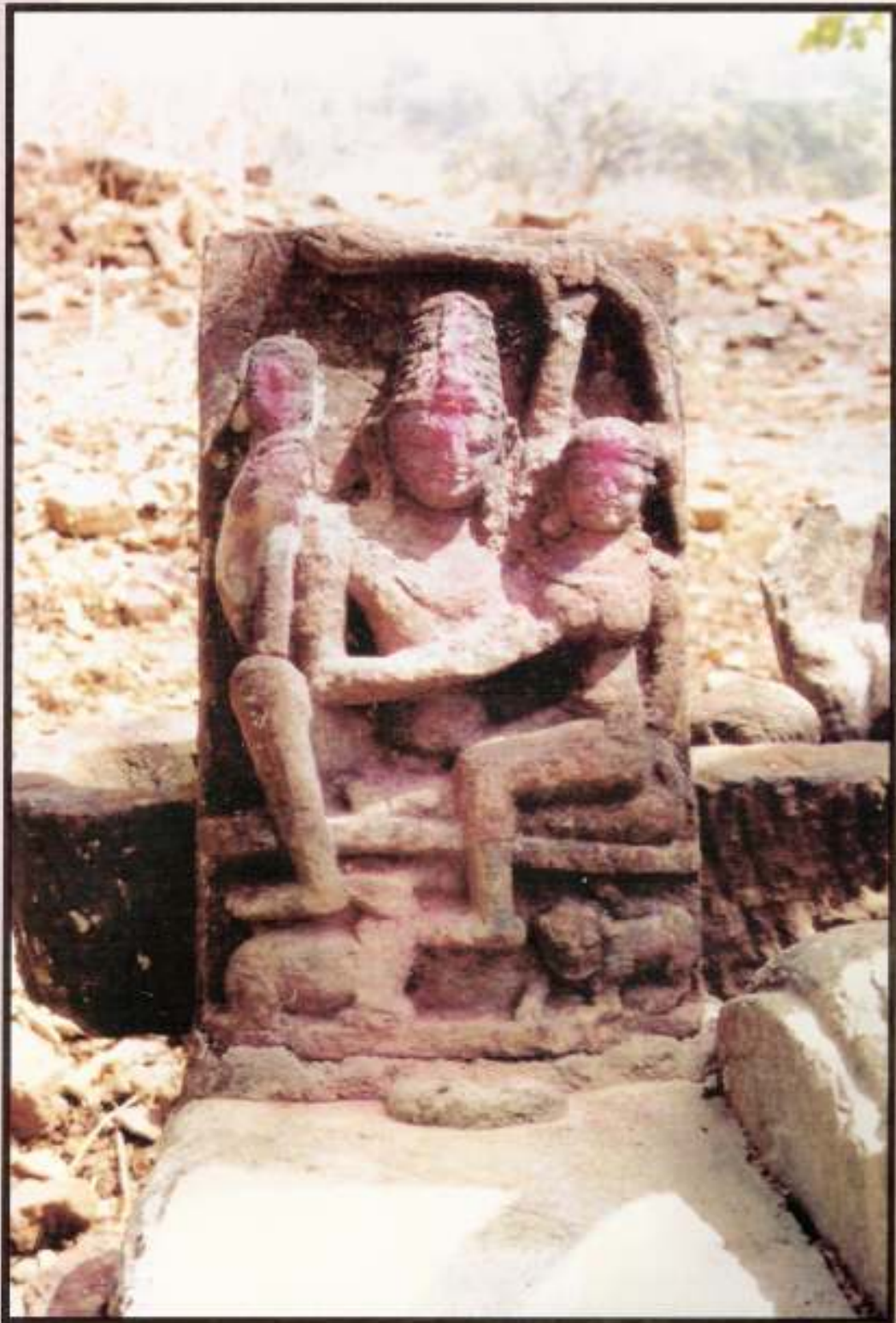














The Temple of Tanginath

The ruins of the tanginath temple are on the top of a small hillock in the Manjhgaon, a village in the extreme western portion of Chainpur Thana in the district of Gumla. This hillock is commonly known as Tanginath hillock (Pahar) after the god Tanginath, Who is wishrined in one of the temples on it.

The Tanginath temple is located at the distance of 75 Kms. North-west Gumla, the district headquarter. The distance of the temple is 9 Kms from the Dumri block. The hill is surrounded in the east by Manjhgaon, Luchutapat, in the west Liria Chua, Kamidara and in the North and Mahuadih in the south.

A metal road turn west after 2 Kms. from the district head quater. It goes to Nava-Toli via Raydih, Manjha-Toli and Chainpur. One can approach Manjhagaon from Navatoli by turning north-west this road. The visitors can reach Tanginath from Manjhgaon turning west via this road. The distance of the temple site from Manjhagaon Mor is 4 Kms. The distance of the temple site from Navatoli is at about 10 Kms.

From halfway,up the hill, one can see bricks scattered about here and there and on the top the ruins of a small temple, the walls of brick temples, mounds of bricks, a large number of stone images, portio colums etc. lying about and large iron Trisua (trident) fixed in the ground. This last is the most prominent object in the group and consist of octagonal rod of iron. 11 inches in perimeter, projecting 22 inches above the ground at an angle of about 60 degrees to the horizon, surrounded by a knob and over it a trident which now measures 22 inches in height. The end of this trident have ceidently been lessen off but lying off the ground close by, are blades of iron, which fit with the broken ends and these are said to have formed the three prongs. The one which is said to have been the central is shaped like a very much elongated leaf, 6'9" feet 5 inches long and 11½ inches wide where broadest. The other two are shaped very much like sword, the blade measuring 5 feet 9 inches long by 7 inches wide where broadest. One of these is intact, the other has got broken into two portions. The total height above ground of the trident,

when intact, must have been about 11 feet. The depth to which the rod is embedded in the ground is not exactly known but the villagers assert that they had dug down to depth of 6 feet and found the rod sticking deeper down. If what they say is true, the total height of the trident must have been at least 17 feet. There are joints at the places and so the trimla consisted of three portions welded together, one (the lowest portion, part of which is embedded in the ground) at least 8 feet. There are joints at the places. The most remarkable thing about the trimla is that, although it has stood for ages in the open air, there is no trace of any rust on it like the Iron pillar of Mehrauli (near Qutub Minar, Delhi). The Mehrauli pillar belongs to the Gupta period. (5th- 6th Century AD) is now the trimla is broken into pieces.

The dimension of the temple is small, keeping in mind the gigantic trident. The inner court of the stone temple measures only 6 feet 1½ inches and the passage between the inner and outer gate is only 3 feet 10 inches by 2 feet. The outer gateway has an inner step 8 inches high, and makes above it 4 feet by 1 foot 5 inches high. The roof, except the two gateways and of the passage between has collapsed and the walls, of the inner portion (the temple itself stand to the height of 6 feet 7 inches only). There had been evidently some super structure on the top of the gateways and the passage, but that has also come down. The ground plan is shown in figure - 1 the gateways are composed of rectangular pillars of reddish brown sand stone supporting the large slabs of the same material. The walls are built of blocks of sand stone which also were probably originally of the same time as the gateways but have now been discoloured with age. There are carvings of wreaths, leaves, human figures and small buildings with numerous windows and arches, on the gateways as well as on the outer face of the walls but those on the latter have mostly become indistinct. In the lower portion of each of the two pillars of the outer gateway is carved, in a niche measuring 1 foot 9½ inches by 11½ inches, a female figure 16 inches high with one arm bent across the chest and holding something like a small jar, in the upper portion are carried two vertical wreaths, the inner one sinks about 2½ inches below the other and supported by a bird very much like a goose. The slab also forming the roof of the gateway, has carried on its outer face wreaths corresponding to those on the pillars; the lower one, which corresponds to the inner wreath of the pillar has in the middle a small figure of Ganesa. The carvings on the inner gateway are male figures 2 feet 7 inches high, each with four

each with four hands, They wear garlands placed like a sacred thread of Brahmanas; the garland of the one of the left hand side is composed of nine human heads, The slab on the top of this gateway is cut as in figures but has no carvings on it. There are in the inner court two Sivalingas, evidently placed there long after the temple was built, these are surrounded by broken portions of pedestals of columns.

The general appearance of the temple, as it looked, when intact, must be left to conjecture. Judging from the portion that is still standing, one is inclined to believe that it was similar to that of temples at Para in the district of Purulia (West Bengal). It is a smaller version of the same style in which the great temple of Bhubaneswar is built.

The ruins of a bricks temple of comparatively late period, having been built by Raja Ram Singh of Jaspur, as a mark of gratitude to the God Tanginath, Which favoured him with child. It is said, however, That the bricks were taken from the remnants of a large brick temple which once stood there, The God Tanginath, enshrined in the brick temple. consists of several pieces of black stone, fixed in the ground in the centre of the brick temple in the form of a linga.

Supported against one of the walls of this temple is a stone slab, 3 feet 2 inches high, with a male figure 2 feet 4 inches in height, with four hands carried on it. Two of the arms are bent, and the closed fist hold, one small Gada (mace), the other are Padma (Lotus) pointing upwards; the other two hands are hanging down, without starched palms touching the heads of the two small figures entwined by snakes - left one also holds a cunch. There are two snakes on the body of the principal figure itself. One of the head is what looks like Jatamukuta (tall cap of heir) and the ears ornaments are long ornaments hanging down to the shoulder; the face has perfectly peaceful expression. At the corner of the top are two small figures. holding between them an arch (chatra) over the hand of the principal figure who can be indentified as Vishnu.

Beside the ruin of temple, there are good number of images, portions of columns, animal figures, a number of siva lingas and other object lying scattered outside the temple and the ruins of brick temple buried underneath at a distance of about 110 feet north of massive trisula.

Most of the images bear considerable resemblance to the one inside the brick temple already described, the most important among them are the following :

There is a representations of a four armed Bhairava. He holds Damaru and swords in his right hand and khappar and munda mala in his left hands with a jatamukta on his head. The image is 2' 7½" X 9".

The Siva is represented with trisula in his right hand and left hand is in the Abhaya Mudra. He is wearings necklace and kundala. The above noted images have been carried in a block of stone of 2' 7½ "X 8½". A Sivalinga is placed inside the templ. Its length is 1' 8½" and its diameter is 1' 9". It is made of stone.

The entrance of the temple is quite interesting and beautiful. The flowers, Navagrahas, Ganes, Ganga, Yamuna have been artistically carved. The image of the Lord Ganesh has been beautifully made of . The peacock has been carved artistically. The peacock is touching its tale by the peak, The image of two ladies have been carved on each side of the door jamb. They are holding kalasa in their hands the length and breadth of the images are respectively 1' 8½" and 8". These are the images of Ganga and Yamuna.

The images of Varahi, Vishnu, Surya, Goddesses, Elephant and Vyala are located north of the temple. The image of Vishnu is 2 feet high and 1 feet 2 inch wide. He is standing on the lotus pedestal. The image of Surya is quite interesting. He is sitting on the chariots with seven horses. His chariotier Aruna is driving the chariot. The Surya is holding lotus flowers in each hands, The height of the image is 2 feet and 2½ inches and its width is 1 feet and 1½ inches.

The image of Gaja and Vyala is quite interesting. The figure of lion has been carved above and the figure elephant has been carved below. The height of image 2 feet 6½ inches and its width is 10 inches.

The bricks built kunda is located north of the trisula site. Its length, width and depth is a follows- 5.00 m. X 4.10 m. X 1.50 m. The flight of steps of the stone blocks have been provided on the west side of the kunda. The inlet of the kunda is located on the south side. The size of the bricks are 1 feet 1½ " X 8½ " X 2¾ ". The kunda has been made to store the waste water of the temple.

A modern brick temple is located on the west side. Its existence is on the west side. Two images of Mahisasur mardani have been placed inside the temple. Beside the images of the goddess Durga, four damaged images have been placed inside the temple.

Two couples, each consisting of a male and female embracing each other; the male in either has four hands, the female has two.

All these figures have exceedingly slender waists, tall chignons (or head dress) long ear ornaments hanging down to the shoulders and perfectly peaceful expressions. Many of them wear necklaces and some wear also garlands which are in variably placed like sacred thread (Janeu) around waist is generally band from the middle of which hangs a koupin (narrow waist cloth) between the legs and the band is most cases surmounted by what looks like a snake coiled round the body.

The female figures are of the same physiognomy and with similar headdresses as the figures described above but they are depicted like the goddess Durga. They all have eight arms; her one foot the left is small and other rests on an Asura (demon-Mahisasur) which is being fiercely attacked by an animal (probably a lion), or on the back of the attacking lion. One hand of the goddess holds the Asura by hair, one hand holds a bow, another a sword, a fourth a lance and two more hands hold things indistinct quits.

There is no tradition how and when the temples were built or the images carved. The Pujaris or Baiyas, as they are called, belong to Ahir Paik caste (S.C. Ray JBORS-1, 1915). Ray further said that some of them have distinctly aboriginal feature and have evidently aboriginal blood in their veins. They tell the following story as to how they have come to the Pujaris of the God. Two brothers Surat Manjhi and Murat Manjhi lived in a village Agorband in the former Surguja State, employed in some capacity in the Raj. For some unknown reason the Raja got annoyed with Surat and Murat and putting them in chains, buried them in pits. The God Tanginath took pity on them and appearing before them in dream, gave them a cucumber to eat. Inside the cucumber they found a knife with which they managed to cut open the chains and came out of the pit. The god then directed the brothers to follow a deer into whose body they entered. The deer took them to Borwadi in the paragana Borwe and stopped their for the night. Next morning the deer resumed

its journey and took the brothers to Katitola Nawadih, a few miles south of Manjhgaon. There the brothers lived for some time. Some time later Tanginath again appeared and asked them to move to Manjhgaon where He said his habitation was. Surat declined but Murat obeyed the god's bidding and coming manjhgaon, discovered the temples on the hills. Since then he and his descendants have been the baigas or the priests of the God.

The ground plan of the stone temple and the plan of the top of its inner gateway have been copied from JBORS (1915).

On the stylistic ground the temple has been dated to the 6th century A.D. by Prof. B. P. Sinha, 2000, Directory of Bihar Archeology), Prof. Dilip Chakrabarti of Cambridge University land on belives that the temple of Tanginath may be placed between the 9th - 10th Century A.D., D. R. Das believes that the temple may be ascribed to the 9th -10th century A.D. on account of its Purobhaga displaying Pattika elapsed between two khura shaped moulding. several temples of stone and bricks existed at the site.

All the above mentioned evidences suggest that the temple building activities begin during the 6th-7th century AD and its continued upto the 9th - 10th century A.D. The evidences further suggest that the temples belong to the Brahmanical faith. Both sandstone and bricks were used for building temples at the site. The stone temple are dry structure, while mad mortar has been used for building brick temples. The temples belong to the Rekha order of Orissan slipa texts. Though in appearance the stone temple resemble of Orissa but it has got its own metrology of planning and buliding temples in different part of the Jharkhand state.

The above materials further goes to suggest that the site of Tanginath is archaeologically very rich not only in the state of Jharkhand but also in in whole country. The Department of Art, Culture, Sports and Youth Affairs, (Archaeology Sector) is going to conserve and beautify the site.

